स्वतंत्रता -दिवस पर प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का लाल किले के प्राचीर से भाषण

१५-८-१९६६

इस ऐतिहासिक दिन पर , इस ऐतिहासिक स्थान पर मैं ...ा और भारतनिवासियों का अभिवादन करती हूं । १९ साल हुए ...वर्ष ने एक नया जन्म लिया । इतिहास में कुछ ऐसे क्षण होते हैं ...सका हर एक देशवासी के जीवन पर गहरा असर पड़ता है । वैसे आज ...ि यह १५अगस्त का दिन, भारतवर्ष के लिए इस दिन हमने एक नया ...पलटा, एक नयी जीवन का आरम्भ हुआ । १९ साल हुए इसी जगह से ...पहले प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने इस तिरंगे को फहराया, आज़ादी ...ति जलायी, आज़ाद भारत की बुनियाद डाली । यहां पर खड़े होकर ...द आती है उन नेताओं की और उन बेशुमार लोगों की जिन्होंने आजादी ...दोलन में हिन्दुस्तान के कोने-कोने में सबकुछ भुला कर कूद पड़े, जान ..., परिवार त्यागा, सबकुछ दे दिया । कितने बड़े बड़े वह नाम थे, ...बड़े इन्सान थे और कितने बड़े उनके त्याग । आज उनकी याद आती है । ...क्या क्या किया और यह भी हम महसूस करते हैं कि उनके त्याग ...साहस और हिम्मत के कारण आज हम आजाद हैं और हमारे ऊपर ...जो जिम्मेदारी है कि जो उन्होंने रास्ता दिखाया उस रास्ते पर हम

...यहां खड़े-खड़े भारत की लम्बी कहानी याद आती है, पुराना ...इतने वर्ष पहले भारत ने दुनिया को एक नेतृत्व दिया, चाहे विज्ञान ...चाहे दर्शन हो, चाहे किसी भी दिशा में भारत बहुत आगे था, भारत ...नू था । आज यह सब बातें हमारे सामने हैं और हमारी और आपकी ...जो है कि हम कोई काम ऐसा न करें कि इस लम्बे इतिहास पर, ...इस कहानी में किसी तरह का धब्बा पड़े । आज सबसे ज़्यादा याद ...हमारे राष्ट्रपिता की, महात्मा गांधी की । उन्होंने बहुत कुछ हमारे ...लिए किया लेकिन आज मैं केवल उनका एक छोटा सा सन्देश आपको ...आपको मालूम है कि जवाहरलाल नेहरू ने उनको एक दफा जादूगर

पुकारा था और जवाहरलाल नेहरू विज्ञान को मानते थे, नयी दुनिया को मानते थे। तब भी वह महसूस करते थे कि गांधी जी के सन्देश में कितना सच है और हमारे समय के लिए कितना वह सन्देश, वह रास्ता आज भी उपयोगी है। वह सन्देश क्या था? तीन छोटे से शब्द- अहिंसा, सत्य और स्वदेशी। ये मैं चाहती हूं कि इसको हम आज का भी सन्देश मानें। अहिंसा मायने क्या? शान्ति, एक दूसरे से मिलजुल कर रहना, एक दूसरे की विचारधारा को आदर देना, बाहर के देश जो दूसरी विचारधारा के हैं उनका भी आदर करना, उनसे भी दोस्ती करना, हमारे विधान के अनुसार रहना, यह सब बातें इसी छोटे से शब्द में आ जाती हैं।

दूसरा सत्य। सत्य है जीवन को कैसे हम साफ रखें, कैसे हम हर एक काम इस रीति से करें कि देश को उससे लाभ हो, कोई हमारे जीवन में झूठ नहीं आये, दम्भ न आये, कोई ऐसी बात न हो जिससे भारत माता को बुरा लगे। तीसरा है स्वदेशी। सत्य में एक बात और है। सत्य में है निडरता भी शामिल है। जो भी हमारे देश के लिए आजादी के आन्दोलन के समय और आज भी यह उतनी ही जरूरी है कि हमारे अन्दर निडरता आए निडरता के मायने यह नहीं कि हम बहादुरी से हम कुछ काम करें बल्कि यह भी कि हम गलतियों से न डरें, परिवर्तन से न डरें। विवेक नये रास्ता लेने को तैयार रहें, नए विचार लेने को तैयार रहें। देश की समस्याओं को हम समझें क्योंकि उनको समझ कर ही हम सही रास्ता ढूंढ सकते हैं और उस रास्ते पर चल सकते हैं। यह एक ऐसा उसूल है जो तब भी हमारे लिये मददगार थे, ठीक थे और आज भी हमें एक रास्ता दिखाता है।

तीसरा बड़ा उसूल था स्वदेशी। आप सब जानते हैं कि हमारे देश की आर्थिक स्थिति आज क्या है? आपको मालूम है कि उसका हम भी सुधार सकते हैं अगर हम स्वदेशी का उपयोग करें। स्वदेशी का मतलब यह नहीं है कि हम बाहर का माल के खरीदें नहीं बल्कि उसके यह भी मायने हैं कि हम बचत करें, जो भी हमारे पास है उसका उपयोग करें, जो भी साधन हैं, जो भी तरीके हैं और अगर ऐसे कोई तरीका है जिनके इस्तेमाल से विदेशी माल की जरूरत है तो हमारे नौजवानों को नये तरीके ढूंढना चाहिए, नये रास्ते ढूंढना चाहिये। यह ठीक है कि ये जिम्मेदारी सरकार की है लेकिन उतनी ही जनता की भी है। अपने घर में, अपने गांव में,

378

मुकान में, किस तरह से स्वदेशी को बढ़ायें, अपनी भावना में कैसे स्वदेशी यह चीज़ हैं, बड़े उसूल हैं जिन पर आज हमको चलना है।

हमने समाजवाद का रास्ता लिया इसलिए कि इस देश की गरीबी और किसी तरह से दूर नहीं किया जा सकता और हमारे समाजवाद में प्रजातंत्र एक बड़ा हिस्सा है, बल्कि वही उसकी बुनियाद है। प्रजातंत्र हर एक व्यक्ति को हक देती है, एक बड़ा हक, एक बड़ा अधिकार और साथ साथ उसको सफल करने के लिए एक कर्तव्य भी मांगती है। ये काम हम कर सकें तो हमारे काम चलेंगी। हमारे बहुत से कार्यक्रम चले हैं लेकिन जो भारी प्रश्न है, जो गरीबी का प्रश्न है, वह हमारे सामने एक बहुत बड़ा प्रश्न है और हमारे ऊपर एक अंधेरा छाया है। लेकिन मैं मानती हूं कि उसका सामना हमारे राष्ट्र की जोरों से, साथ चलकर हम उसका सामना कर सकते हैं और मेरी आप सब से प्रार्थना है इसमें हमारा [redacted] साथ दें।

हमारे किसान भाई- आप हैं देश की बुनियाद, आपकी जनसंख्या अधिक है। आप हैं हमारे अन्नदाता। हमारे कार्यक्रम चलें या न चलें, मेरी प्रार्थना है कि आप नये तरीकों को, नये रास्तों को अपनायें और उत्पादन बढ़ाने का काम हो, चाहे गांव के ग्रामीण जीवन को सुधारने का सवाल हो उस सब में सहयोग दें। मजदूर भाइयों, आपका काम भी कुछ कम नहीं है और आपकी जिम्मेदारी भी बहुत बड़ी है। चाहे सुरक्षा का काम हो, चाहे देश की उन्नति का काम हो, आप के कारखानों की पैदावार पर वह निर्भर है। आप पैदावार बढ़ाएंगे, उत्पादन बढ़ाएंगे तो आपकी स्थिति भी सुधरेगी और देश की स्थिति भी सुधरेगी, और हमारे कार्यक्रम और आगे बढ़ेंगे।

इस समय हमारे बहादुर सिपाही, हमारी बहादुर सेना हमारी सरहद पर डटी खड़ी है। हमारे दिल उनके साथ है लेकिन हम समझते हैं कि देश की सीमा खाली हिमालय पर नहीं है। देश की सीमा सीमा पर नहीं है, देश की सुरक्षा की सीमा, देश को बचाने की सीमा है वह हर गांव में है, हर खेत में है, हर शहर में है और इसीलिए जैसे किसान भाइयों की मदद चाहिये, जैसे अपने मजदूर भाइयों की मदद चाहिये, वैसे और जितने हैं, चाहे वह

तानेदार हों, चाहे वह व्यापारी हों, चाहे और जिस तबके के हों या जो भी
करते हों, उनकी भी भारी ज़िम्मेदारी इस समय देश पर है । ये वह
का स्तर ऊंचा करें, राष्ट्रीय जीवन में सच्चाई लाएं, सत्यता लाएं,
लाएं और इसी तरह से हमारे दूसरे भी भाई हैं, हमारे कलाकार हैं, लेखक
विचारकार हैं, लेखक और सब हैं जिनकी जिम्मेदारी दूसरी तरह की है
वह जिम्मेदारी है कि नयी पीढ़ी को, सारे देश को मार्गदर्शन दें, सीधे
पर चलना सिखायें । अपना मन ऐसा खुला रखें कि बाहर के विचार आ सकें
बाहर भी हमारे अच्छे विचार भेजे जा सकें । ये भारी जिम्मेदारी उनकी
है । आज समय नहीं है कि हम रुक जाएं बल्कि आज हमें बढ़ना है ।
हमारे देश में कुछ ऐसे तबके हैं जो सदियों से पिछड़े रहे हैं, गरीब रहे हैं, दबे
हैं हमारे हरिजन भाई और बहन, हमारे आदिवासी भाई और बहन,
पहाड़ के लोग, हमारी अल्प जाति के लोग, उनकी तरफ हमारा विशेष
ध्यान है । उनके लिए कार्यक्रम बने हैं लेकिन हमें अच्छी तरह से मालूम है कि
ज्यादा और करना है, कितनी उनकी तकलीफें हैं, कितनी उनकी
परेशानी है, खास तौर से इस सूखे के साल में उनको जो तकलीफ हुई वह
ही कहीं दूसरे को हुई हो । यह हम पूरी तरह से महसूस करते हैं और
यह भी जानते हैं कि जब तक हम उनको ऊपर नहीं उठाएंगे, तब तक हम भी
ऊपर उठ सकते । जब तक वे आगे नहीं बढ़ेंगे, तब देश भी आगे नहीं
सकता । तो उनका उठना ज़रूरी है । आपसे भी हमारी विनती है कि
आपकी सहायता करें और आप हमारी सहायता कीजिए ।

कृ० पृ० उ०

और फिर हमारी प्यारी बहिनें, जो हरेक तबके की हैं, हरेक काम में हैं, और जिन के ऊपर काम का बोझ अलग और उस के ऊपर घर चलाने का बोझ, नई पीढ़ी को बढ़ाने का बोझ, महंगाई का सामना करने का बोझ, कमी का सामना करने का बोझ। देश की आधी जनता वे हैं। सदियों से उन्हों ने इस देश को शक्ति दी, सदियों से उन्हों ने इस देश की सभ्यता को ऊंचा रखा। आज भी हम उन की तरफ देखते हैं कि हमारी सभ्यता को, हमारी परम्परा को, और वे ध्यान दें, उस को ऊंचा रखें। आज भी उन की तरफ हम देखते हैं कि वो वे हम को शक्ति दें। आज भी हम उन की तरफ देखते हैं कि अपनी सहन शक्ति से हम को मजबूत करें। आज भी हम उन की तरफ देखते हैं बहुत से गुणों के लिये जिस के लिये भारतीय महिला हमेशा से प्रसिद्ध रही है। यह सब है भारत की जनता। हमारी आजादी के आन्दोलन में बहुत से लोग थे और उन में से बहुत से आज हमारे बीच में नहीं हैं, उन सब को हम श्रद्धांजलि पेश करते हैं। बहुत से हैं जो बूढ़े हो गये और जिन का बहुत बड़ा तजुर्बा है, जो हमारी सहायता कर सकते हैं। वैसे उमर तो हम सबों की बढ़ती जा रही है। लेकिन अब एक नई पीढ़ी खड़ी हुई है और तैयार है। उस ने आजादी का आन्दोलन नहीं देखा। उस ने नहीं पहचाना कि हमारे दिलों में क्या आग थी, हमारे मन की क्या प्यास थी, हमारी आत्मा की क्या मांग थी। लेकिन चाहे हम बूढ़े हों, चाहे छोटे हों, चाहे हमें आजादी के पहले दिन याद हों, चाहे न मालूम हों, आज के भारत की जिम्मेदारी हम सब पर है। आज हम चाहें, चाहे हम न चाहें, आज के भारत को चलाने का काम हम हरेक नागरिक पर है, छोटे बच्चों पे भी है और बड़ों पे भी है। और अगर इस काम को हम मिल के एकता से अपनी पूरी शक्ति लगा के करने को तैयार होंगे तो हम निश्चय ही उस काम को पूरा कर सकते हैं। हमारे जो प्रश्न हैं, वे बहुत बड़े हैं, लेकिन ऐसे नहीं हैं कि जो हिम्मत से काबू नहीं कर सकें उन को। वह हिम्मत भारत में है और उस हिम्मत का उपयोग करना है। अगर सब लोग मिल के इस काम को मिल के लेंगे तो मैं मानती हूं कि हमारे ऊपर जो दबाव हैं, आज दबाव हैं, बाहर के दबाव हैं, देश में गरीबी का दबाव है, आपस में फूट के दबाव हैं, और बहुत से ऐसे दबाव और कठिनाइयां हैं। लेकिन हमारे बच्चे, गांधी जी और पंडित जी के, हमारे सब नेताओं के रास्ते पे चलके उन सब के दबावों को हटा सकते हैं अपने रास्ते से और तेजी से आगे बढ़ सकते हैं, समाजवाद के रास्ते पे। और एक लड़ाई हमारी सीमा पे है लेकिन दूसरी लड़ाई उतनी ही महत्व की हमारे देश में है, वह

रीबी से लड़ाई, और पिछड़ेपन से लड़ाई है । वह लड़ाई हम कैसे लड़ें, जब
हम नये विचारों को न रक्खें, जब तक हम अपने बीच से अन्धविश्वास को
हटा दें, और जब तक हम निश्चय करें कि जो हमें करना है,
आगे बढ़ाने के लिये, चाहे कितने त्याग की जरूरत हो, कितनी कठिनाई
हो, उस को करने के लिये हम तैयार हैं, और हरेक हम में से उस की
जिम्मेदारी लेगा । यह जिम्मेदारी किसी संस्था की नहीं है, किसी दल की
नहीं है, यह जिम्मेदारी हर एक व्यक्ति की है, चाहे गरीब, चाहे अमीर,
चाहे बड़ा, और चाहे छोटा, हर एक पुरुष की, हर एक स्त्री
की, हर एक बच्चे की । और अब ऐसा समय आ गया है कि उस जिम्मेदारी
को हम छोड़ नहीं सकते । हम देश के जीवन में दर्शक बन के नहीं रह सकते ।
हम उस के सिपाही हैं । हम और आप, हमारे नौजवान हैं, हमारे विद्यार्थी
हैं, जो लड़ाई के समय अपनी जान देने को तैयार हो गये थे, खून से खत लिखने
को तैयार थे । मैं कैसे मानूँ कि आज वह भारतमाता की दुःखभरी पुकार नहीं
सुनेंगे, आज जो भारत माता की कठिनाइयां हैं उन से लड़ने को भी उसी
हिम्मत से तैयार नहीं होंगे । आज जैसे मैं ने कहा बनाने के दिन हैं भारतमाता
के नये जीवन को, न कि तोड़ने के । तो इस तरह से हम मिलें यह मेरी आप से
प्रार्थना है । यहां हम भारत की राजधानी में एक ऐतिहासिक स्थान पर आज
मौजूद हैं । लेकिन हमारे साथ आज बहुत से लोग हैं खाली दिल्ली शहर के
नहीं बल्कि भारत के शहरों और गांवों में हमारी तरफ सब का ध्यान जा
रहा है + पीछे भी भारत का बड़ा इतिहास पर और आगे भी भारत का
उज्ज्वल भविष्य पेश है । हम उस भविष्य को कैसे उज्ज्वल बनायें, हम अपनी नीतियों
को, अपने कार्यक्रमों को, अपने आदर्शों को, सफल कर सकते हैं या नहीं,
इस का जवाब हर एक नागरिक अपने दिल से पूछे । अगर उस का दिल कहता है
कि वह यह काम कर सकता है तो निश्चय ही कर सकते हैं हम । लेकिन अगर
हमारे दिल में शक है, शंका है, कोई झिझक है, तो यह काम हमारे लिये
मुश्किल हो जाता है । इसी लिये मेरी आज आप से प्रार्थना है कि इस शुभ दिन, इस
शुभ अवसर, पर हम यह दृढ़ निश्चय करें कि इन सब चीजों का हम सामना
हिम्मत से, अपनी पूरी शक्ति से, करेंगे और जिस रास्ते पर हम को भारत को
ले जाना है, देश की सुरक्षा, दूसरे देशों से, बाहर की शक्तियों से, अन्दर की
कमजोरियों से जो करना है उस का हम जोरों से सामना करें ।

यह कोई आसान काम नहीं है। और न हम कभी समझते थे कि यह आसान काम है। अगर हमारी जो कमियां हैं वह हो सकता है कि कुछ गलतियों से हुई हों, हो सकता है कि काम और तेजी से हो सके और अच्छा हो सके, लेकिन उस के साथ साथ हम को यह भी मानना है कि हमारी बहुत सी जो कठिनाइयां हैं वह हमारी कामयाबी के कारण हैं, हम आगे बढ़े हैं इस लिये हैं। अगर हम रुके रहते, खड़े रहते, तो शायद यह कठिनाइयां नहीं बढ़तीं। हां गरीबी बढ़ती और हम दबते, वह कठिनाइयां होतीं, लेकिन आज की जो आगे बढ़ने की कठिनाइयां हैं वे शायद नहीं होतीं। लेकिन दोनों रास्तों को देख के, आंखें खोल के हमने यह आगे बढ़ने का रास्ता चुना, हमने कठिनाइयों का रास्ता चुना। आज मुझे खेद है और दुख है कि गांधी जी ने जो अहिंसा का रास्ता दिखाया था उस से हम कुछ हट पड़े हैं। देश में हिंसा बढ़ी है। बाहर भी हम देखते हैं कि हर जगह हिंसा हो रही है। यह इस को दूर करने का एक ही रास्ता है। हमें एक ऐसा वातावरण बनाना है, एक विचारधारा बनानी है। इस में हमारी जिम्मेदारी है, सरकार की जिम्मेदारी है, लेकिन उतनी ही जिम्मेदारी आप की है जो मां बाप हैं, जो अध्यापक हैं, हर एक नागरिक की है कि किस तरह से एक ऐसा वातावरण बनायें, ऐसी विचारधारा फैलायें, कि जिस में यह तोड़ने की, यह नष्ट करने की भावना न पैदा हो। हमारा उत्पादन अगर रुकता है, मजदूर अगर काम नहीं करते हैं, तो हानि खाली देश की नहीं होती है, बल्कि हर एक मजदूर के परिवार की होती है। अगर देश का उत्पादन बढ़ता है, देश की दौलत बढ़ती है, तो देश को, कारखानों को, लाभ होता है, लेकिन हर एक मजदूर को भी लाभ होता है, उस का जीवन भी सुधरता है। तो इन सब चीजों पर हम विचार करें और हम निश्चय करें कि आज हम एक प्रण लें कि जो पुरानी जो हम में आजादी के सिपाही थे और आज इस नई लड़ाई में आप सब सिपाही हैं, हम सब सिपाही हैं, तो हम फिर से जो तब दीवानापन था, उस दीवाने-पन को आज फिर हम अन्दर लायें, आज हम अपने दिल में वह क्रान्ति पैदा करें जो हमें बैठने नहीं दे, हमें सदा कहे हमारे कानों में, हमारे दिल में हमारे मन में, कि उठ, चलो, भारतमाता इंतजार कर रही है, भारतमाता तुम्हारी मांग कर रही है। यह क्रान्ति की आज भी जरूरत है। और मुझे मालूम है कि यह भावना हमारे अन्दर है, अगर उस को दबायें नहीं, अगर उस को दूसरे उल्टे रास्ते पर न मोड़ें। ...उस क्रान्ति को उल्टे

...ते जाने की कोशिश कर रहे हैं । इस से देश नष्ट होगा , उस के साथ
...नष्ट होंगे और हमारे वे वीर सपूत जिन को हम याद कर रहे थे , जिन्होंने
... वे सोचेंगे कि उन का त्याग बेकार गया । आज हम फिर
...उन की तरफ देखें और इस प्यारे तिरंगे की आन और मान को सदा
...ऊंचा रखें ।

हमारा नारा जयहिन्द है । सारे देश का नारा । क्या मायने
...और जब हम उस नारे को पुकारते हैं तो हमारे मन में क्या भावना आती है
...में क्या आनी चाहिये ? हर वक्त यह भावना आनी चाहिये कि हमें
आत्मविश्वास है, अपने ऊपर , अपने देश पे , अपने राष्ट्र पे , विश्वास है ।
हमें अपनी एकता पर विश्वास है , हमें अपनी हिम्मत, और काबलियत, पर
... अपने आगे बढ़ने की शक्ति पर विश्वास है । हर एक दफे जब
आप जयहिन्द करें , तो यह भावना आप के दिल और मन में होनी चाहिये ।
... जोर से कहेंगे , तो यह आवाज दुनिया में गूंजेगी , और दुनिया के
...ों को भी बतलायेगी कि हिन्दुस्तान एक भारी संकल्प में है , एक भारी
चेष्टा, एक प्रयास में है । आज का दिन ऐसा भी है , बाहर जो हमारे मित्र
...हैं उन की तरफ भी हम दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं । और खासतौर से वह
जो साम्राज्यवाद में फंसे हैं उन को हम कहना चाहते हैं कि हमारा साथ
उन के संग रहेगा । और हम दुनिया को बताना चाहते हैं और फिर से अपने
... हम यहां पे निश्चय करना चाहते हैं कि जहां भी अन्याय के और लड़ाई है
वहां उन लोगों के साथ हम हैं और सदा रहेंगे । हिन्दुस्तान ने हमेशा अपनी
...फ़िक्र पहले नहीं की, लेकिन जहां दुख हो, अन्याय हो वहीं हमारा ध्यान गया
। अपने देश से अन्याय को हटाना चाहते हैं , अपने देश में हम आज भी लोगों
... जिन्हें आजादी के पूरे मौके नहीं मिले उन को हम देना चाहते हैं ।
आजादी में शायद हमें कुछ कठिनाइयां हुईं लेकिन कठिनाइयों के साथ
...साथ नये मौके भी उठ खड़े हुये हैं , नई आशायें बनी हैं , और वही हम
चाहते हैं कि नये मौके, और नई आशायें हमारे देश में फैलें, और दूसरे देशों
जहां के लोग गरीब हैं, जहां दबे हुये हैं , जहां लोग अत्याचार से लड़ रहे हैं ,
उन को भी वही मौके मिलें , उन को भी वही आजादी की ताज़ी और
...खुशगवार हवा खा सकें ।

आज तो आप की तरफ से और हमारे जो पुराने नेता थे उन के
...से, सारे भारत की तरफ से आज मैं यह प्रतिज्ञा करती हूं कि हम इस भारी
...में चाहे देश के अन्दर , चाहे देश के बाहर अत्याचार से लड़ने के काम में

अन्याय से लड़ने के काम में, और अपने देश को ऊपर उठाने के काम में, हम मिल के एक सेना में जैसे अनुशासन होता है वह अनुशासन रख के, गांधी जी के, पंडित जी के, हमारे महान बड़े बड़े नेताओं के रास्ते पे हम लोग कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ेंगे और थोड़े ही दिनों में, थोड़े ही महीनों में, और थोड़े ही साल में इस भारत को दिखायेंगे कि हम एक नया जीवन बना सकते हैं ।

अब मैं चाहती हूं कि मेरे संग मिल के आप वह पुराना नारा, जो नेता जी सुभाष बोस ने हम को दिया, जो पंडित जी ने, शास्त्री जी ने और हमारे सारे देश ने, देश के किसान, देश के मजदूर, देश के विद्यार्थी, देश के नौजवान, सबों ने अपनाया है क्यों कि इस में हम सब शामिल हैं, यह नारा देश की एकता का नारा है, देश की शक्ति का नारा है । मैं चाहती हूं कि आप सब मिल के मेरे साथ इस नारे को तीन बार बोलें और याद रखें कि यह आवाज एक छोटी सी आवाज नहीं है, एक महान देश की आवाज है, और महान देश की आवाज तो कोने कोने में, दूर दूर के पहाड़ों तक पहुंचना चाहिये, उन को प्रेरणा देनी चाहिये और उन को उन की हिम्मत और उत्साह बढ़ाना चाहिये । हमारा जो पुराना उत्साह था, आज उस को हमें फिर से जीवित करना है । बोलिये जय हिन्द, जय हिन्द, जय हिन्द ।